Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. college Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper- IV
Date:- 10-10-20
DO-Next-class

Gestalt Psychology

Contribution in the Field of Perception.

(IV) क्षेत्र गतिकी (Field dynamics) :- गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों का संबंध प्रत्यक्षनात्मक समग्रता (Perceptual Whole) से है, इनका बल क्षेत्र गतिकी (Field dynamics) की व्याख्या पर स्वतः काफी अधिक है। बोरिंग (Boring, 1950) ने कहा है कि गेस्टाल्टवादीयों से क्षेत्र का मतलब एक ऐसे गत्यात्मक तंत्र (dynamic system) से होता है; जहाँ एक भाग में परिवर्तन होने का प्रभाव एक दूसरे भाग पर भी सार्थक रूप से पड़ता है। मनोवैज्ञानिक अनुभूति का गत्यात्मक क्षेत्र (dynamic field) स्वयं व्यक्ति एवं पर्यावरण के साथ उसके द्वारा किये गये अन्तःक्रिया (Interaction) होता है। ~~मानव व्यवहार इस तरह के प्रत्यक्षनात्मक~~ प्रत्यक्षनात्मक क्षेत्र में संसंजक बल (cohesive) तथा अवरोधक बल (Restraining forces) दोनों ही होते हैं। प्रत्यक्षण में जो संतुलन स्थिरता तथा सममिति (Symmetry) होती है, उनका कारण यही बल (Forces) है।

(V) फाई-घटना तथा समाकृतिकता के नियम (Phi-Phenomenon and Principle of Isomorphism) :- 1912 में बर्लिन विश्वविद्यालय में मैक्स वर्दाइमर (Max Wertheimer) ने गति प्रत्यक्षण के क्षेत्र में

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner

में कई महत्वपूर्ण प्रयोग किये। इन सभी प्रयोगों में इन सभी प्रयोगों में कोफ्का तथा कोहलर ने प्रयोज्य के रूप में कार्य किये थे। इन प्रयोगों में वे स्पष्टतः यह पाये थे की जब दो समान दृष्टि उद्दीपकों (visual stimuli) को एक दूसरे से 1/15 वे सेकेंड के अंतराल से दिखाया जाता है, तो प्रयोज्य को उद्दीपक एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक घूमते या चलते नजर आता है। इस घटना को वर्दाइमर ने फाई-घटना (Phi-Phenomenon) कहा है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यदि 1/15 सेकेंड से अन्तर उद्दीपन अंतराल (interstimulus interval) में कमी या वृद्धि होती है, तो गति का यह भ्रम (illusion) अर्थात फाई घटना (Phi Phenomenon) समाप्त हो जाती है। फाई-घटना से ही गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की नींव पड़ी समझी जाती है।

गति का प्रत्यक्षणात्मक क्षेत्र (perceptual field) बाहर में घटित घटना के समान नहीं होता है, अतः प्रश्न यह उठता है कि इसकी व्याख्या कैसे संभव है? इसकी वैज्ञानिक व्याख्या करने के लिए गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों समकृतिकता के नियम (Principle of isomorphism) का वर्णन किया है। इस नियम के अनुसार जो व्यक्ति वास्तविक रूप में देखता है तथा जो मस्तिष्क (brain) में घटना घटित होता है, के बीच एक एक बिन्दु का सम्बन्ध होता है हालांकि इन दोनों के बीच सदृश्यता (correspondence) वास्तविक रूप (exact form) में नहीं भी हो सकता है। अतः इन दोनों के बीच का स्तम्भ सम्बन्ध स्थान-विशिष्ट (topological) होता है स्थलाकृतिक स्थलाकृतिक (topographical) यह नियम के सहारे फाई घटना की व्याख्या करते हुए गेस्टाल्टवादियों द्वारा पूर्व कल्पना की गयी है कि दो रोशनी या दृष्टि उद्दीपकों

द्वारा मस्तिष्क में उत्तेजित दो केन्द्रों के बीच गत्यात्मक सम्बन्ध (dynamic Relation) होता है। इस गत्यात्मक सम्बन्ध का स्वरूप कुछ ऐसा होता है कि मस्तिष्क का एक उत्तेजित केन्द्र मस्तिष्क के दूसरे केन्द्र को प्रभावित कर पाता है।

समकृतिकता के नियम के समर्थन में गेस्टाल्टवादियों द्वारा कुछ अप्रत्यक्ष प्रयोगात्मक समर्थन (experimental support) को उपस्थित किया गया है। कोहलर तथा हेल्ड (Kohler & Held) 1949 ने एक प्रयोग किया जब प्रयोज्य के आँख के सामने दृष्टि उद्दीपक को ले जाया जाता था, तो मस्तिष्क के दृष्टि क्षेत्र (visual area) उसके (EEG) (electoencephalo gram) को अभिलेखित किया गया। परिणाम में पाया गया की ऐसी परिस्थिति में EEG द्वारा अभिलेख मस्तिष्कीय तरंग (brain wave) में कुछ परिवर्तन होते पाये गये जिसमें इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि प्रत्यक्षणात्मक क्षेत्र (perceptual field) तथा दैहिक मस्तिष्कीय क्षेत्र (psychological brain field) में कुछ सम्बन्ध होता है। कोहलर एवं वालेक (Kohler & Wallach, 1944) ने इसकी व्याख्या मस्तिष्क के परितृप्ति घटना (satiation phenomenon) के रूप में किया गया है। इन लोगों का मत है कि यदि व्यक्ति किसी दृष्टि उद्दीपक (visual stimulus) पर अपना आँख स्थिर करके कुछ देर तक एक टक से कुछ समय जैसे 32 सेकेण्ड या इससे अधिक समय के लिए देखता है, तो सम्बन्धित मस्तिष्कीय क्षेत्र तृप्त (satiate) हो जाते हैं। इसके बाद जब वह अपना ध्यान नयी वस्तु की ओर देता है, तो वस्तु व्यक्ति की नयी वस्तु को थोड़ा विकृत

Scanned with CamScanner

रूप से प्रत्यक्षण कर पाता है। इन लोगों द्वारा किए गए एक प्रमुख ~~प्रयोज्य~~ प्रयोग में प्रयोज्य में दो सेकेंड के लिए एक काले रंग की आकृति पर गौर से देखा और इस तरह ~~के~~ से उसके सम्बन्धित क्षेत्र पूर्णतः तृप्त हो गया। बाद में उसे अपना ध्यान उजले वर्ग की आकृति पर लाने के लिए कहा गया। परिणाम में देखा गया की प्रयोज्य में उजले वर्ग का कुछ विकृत प्रत्यक्षण (distorted Perception) किया। प्रत्यक्षण में इस तरह की विकृति को आकृतिक उत्तरीय प्रभाव (Figure aftereffect) कहा गया है।

Next class

Scanned with CamScanner